International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक शिक्षा में प्रगतिरोध पर उत्तरदायित्व का प्रभाव

नीतू बाला, शोधार्थी
शिक्षा संकाय
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय ,मुजफ्फरपुर

सारः

विज्ञान के युग ने मनुष्य को असीम शक्तियाँ दे दी हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में हम निरंतर सोचते रहते हैं। कला संकाय में आप साहित्य पढ़ते हैं और विज्ञान संकाय में आप परीक्षण करते हैं। मनुष्य में संश्लेषण और विश्लेषण दोनो है। यदि हम एक को काट देते हैं तो मनुष्य अपूर्ण हो जाता है। सम्पूर्ण जीवन हम शिक्षा ग्रहण करते रहते हैं। मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है। शिक्षा मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करे एवं समाज का उपयोगी सदस्य बने। इस शोध पत्र में इस प्राक्कल्पना को प्रस्तुत किया जाता है कि उच्च उत्तरदायित्व के माता–पिता की बालिकाओं की अपेक्षा निम्न उत्तरदायित्व के माता–पिता की बालिकाओं में प्रगतिरोध अधिक पायी जाएगी। भारतीय प्रतिदृश्य में व्यक्तित्व के इस आयाम को मापने के लिए सिन्हा (1976) द्वारा अनुवादित कैल्फिोर्निया साइकोलॉजिकल इन्वेन्ट्री के आर.ई. स्केल के हिंदी रुपान्तरण का उपयोग किया गया।

शिक्षा के सम्बन्ध में हम निरंतर सोचते रहते हैं कि इसमें जीवन के मूल्यों की कोई आवश्यकता है अथवा नहीं। विज्ञान के युग ने मनुष्य को बहुत निकट कर ही दिया है और उसमें असीम शक्तियाँ भी दे दी है। वैज्ञानिक कहते है कि हमारे अध्ययन में तो विश्लेषण है। दोनों विषय आप सामने रखें तो कला संकाय में आप साहित्य पढ़ते हैं और विज्ञान संकाय में आप परीक्षण करते हैं। दोनों का क्रम अलग–अलग है। एक में तो संश्लेषण है अर्थात आयोजित करते हैं और एक विश्लेषण करते हैं, अलग करते हैं। मनुष्य में संश्लेषण और विश्लेषण दोनो है। यदि हम एक को काट देते हैं तो मनुष्य अपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा के संदर्भ में विद्वानों के विचारों पर देश, काल एवं समाज का प्रभाव पड़ता है। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपना भिन्न–भिन्न विचार रखा है। शिक्षा की व्यापकता को देखते हुए उनके विचारों को क्रमशः देखा जा सकता है।

शिक्षा जीवन है। ''शिक्षा का केन्द्र बालक है इसलिए शिक्षा का का ध्येय व्यक्तित्व का उत्कर्ष है''(रूसो)। इससे यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण जीवन हम शिक्षा ग्रहण करते रहते हैं। ''शिक्षा हमारी अंतः शक्तियों का विकास है, उपर से लादा हुआ ज्ञान नहीं है। वह स्वयं बच्चों की कार्यशीलता तथा अनुभवों का परिणाम है।''(पेस्टालॉजी) अर्थात शिक्षा मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करे एवं समाज का उपयोगी सदस्य बने। इसलिए पेस्टालॉजी ने कहा है ''शिक्षा मनुष्य की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक, समरस तथा प्रगतिशील विकास है।''

''शिक्षा व्यक्तिकरण एवं समाजीकरण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यक्तिगत उन्नति तथा समाजोपयोगिता को बढ़ावा देती है।" (क्रो एवं क्रो, 1954 स्किनर 1962, रिली तथा लेविस 1989) ने भी क्रो एवं क्रो के विचारों को पूर्णतः समर्थन दिया है।

महात्मा गांधी के द्वारा दी गई शिक्षा की व्याख्या भारतीय शिक्षा के उद्देश्य एवं स्वरूप स्पष्ट करती है। गाँधी जी के शिक्षा संबंधी विचार इस प्रकार हैं– ''सा विद्या या विमुक्तये''। अर्थात् जो मुक्ति

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के योग्य बनाए वह विद्या, बाकी सब अविद्या। अतः जो चित्त की शुद्धि न करे, मन व इन्द्रियों को वश में रखना न सिखाए, निर्भयता व स्वावलंबन पैदा न करे, निर्वाह का साधन न बताए, गुलामी से छुटने और आजाद रहने का हौसला और सामर्थ्य पैदा न करे, उस शिक्षा में चाहे जितनी जानकारी का खजाना, तार्किक कुशलता और भाषा पांडित्य मौजूद हो, वह शिक्षा नहीं है, अधूरी शिक्षा है।

हमारे देश में महान विचारक और संत स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा का अर्थ बताते हुए कहा है ''मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति करना ही शिक्षा है।'' स्वामी विवेकानन्द जिस अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति का उल्लेख करते हें वह आध्यात्म है और उस मुक्ति के लिए आवश्यक है जिसका उल्लेख गाँधीजी ने किया है।

प्राक्कल्पना:

उत्तरदायित्व चर गफ (1966) के द्वारा निर्मित उत्तरदायित्व मापनी के आधार पर उत्तरदायित्व से संबंधी नैतिक, अनैतिक, सही–गलत, उचित–अनुचित के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है। उत्तरदायित्व के संबंध में इस स्थल विशेष पर यह प्राक्कल्पना किया जाता है कि उच्च उत्तरदायित्व के माता–पिता की बालिकाओं की अपेक्षा निम्न उत्तरदायित्व के माता–पिता की बालिकाओं में प्रगतिरोध अधिक पायी जाएगी।

विधि:

सर्वेक्षण, शोध प्रणाली किसी एक व्यवहारपरक विज्ञान के अनुशासन की अपनी विशिष्ट प्रणाली नहीं है, बल्कि विभिन्न अनुशासनों में इनका व्यापक रूप से प्रयुक्त होने के कारण तथा अपने व्यापक स्वरूप के कारण ही व्यवहार विज्ञानों में परक विभिन्न प्रकार के शोध उपकरणों में इनका बड़ा महत्व हैं।

सिन्हा (1976) ने व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व आयामों को मापने के लिए गफ (1964) द्वारा निर्मित कैल्फिोर्निया साइकोलॉजिकल इन्वेन्ट्री के आर.ई. स्केल का हिंदी रुपान्तरण किया। यह हिन्दी रूपान्तरण भारतीय प्रतिदृश्य पर व्यक्तित्व के इस आयाम को मापने के लिए एक सफल मापनी सिद्ध हुई जिसका उपयोग कई शोध प्रबंधों में सफलतापूर्वक किया जा चुका है।

इस मापनी का परीक्षण पुनः परीक्षण सह संबंध गुणांक 0.65 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए तथा 0.85 अपराधियों के लिए पायी गई।

हिन्दी अनुवाद सिन्हा (1976) का परीक्षण पुनः परीक्षण सह संबंध गुणांक 0.76 पाया गया जो मूल आंग्रेजी मापनी के समतुल्य एवं संतोषप्रद कहा जा सकता है। अतः वर्तमान उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिन्दी में अनुवादित इस उत्तरदायित्व मापनी का प्रयोग श्रेयस्कर माना गया। इस मापनी के कुल 41 पदों में से पद संख्या 2, 4, 6, 9, 10, 18, 20, 22, 24, 26, 30, 31, 32, 33, 34, 37, 38 एवं 39 के **'हाँ'** अंक के लिए एक अंक तथा पद संख्या 1, 3, 5, 7, 8, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 19, 21, 23, 25, 27, 28, 29, 35, 36, 40, 41 के प्रति नहीं उत्तर के लिए एक अंक निर्धारित है।

परिणाम:

उत्तरदायित्व तथा माध्यमिक शिक्षा में अध्ययनरत बालिकाओं में पाई जाने वाली प्रगतिरोध पर माता–पिता की मनोवृति के संबंध में यह अनुमानित किया गया था कि माता–पिता के प्रतिदर्श में उच्च उत्तरदायित्व के माता–पिता की बालिकाओं की अपेक्षा निम्न उत्तरदायित्व के माता–पिता की बालिकाओं में प्रगतिरोध अधिक पाई जाएगी। वर्तमान शोध में प्रयुक्त 400 माता–पिता के प्रतिदर्श पर गफ (1964)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के हिन्दी अनुवाद सिन्हा (1976) का उपयोग किया गया। पूर्ण प्रतिदर्श के प्राप्तांकों के आधार पर दो समूह निर्मित हुए – उच्चतम एवं निम्नतम समूह।

प्राप्तांक के तृतीय चतुर्थांश से उपर के प्राप्तांकों को उच्चतम समूह तथा प्रथम चतुर्थांश से नीचे के प्राप्तांकों को निम्नतम समूह कहा गया। उत्तरदायित्व मापनी के आधार पर निम्नतम प्राप्तांक शून्य तथा उच्चमत प्राप्तांक 41 की संभावना है जिसमें वर्तमान प्रतिदर्श का निम्नतम प्राप्तांक 14 तथा उच्चमत प्राप्तांक 36 प्राप्त हुआ है। इस प्रतिदर्श का प्रथम चतुर्थांश प्राप्तांक 24.78 प्राप्त हुआ है तथा तृतीय चतुर्थांश प्राप्तांक 29.87 प्राप्त हुआ है। उच्चतम तथा निम्नतम दोनो ही समूहों में प्रयोज्यों की संख्या क्रमशः 110 तथा 95 प्राप्त हुआ है।

उच्चतम उत्तरदायित्व तथा निम्नतम उत्तरदायित्व के दोनों ही समूहों के पृथक–पृथक शिक्षा में प्रगतिरोध के प्रति मनोवृति प्राप्तांकों के वितरण तथा दोनों ही समूहों के मध्यमानों का अंतर, प्रमाणिक विचलन तथा उनके टी–अनुपात का तुलनात्मक अध्ययन का स्पष्ट उल्लेख नीचे सारणी में वर्णित है।

सारणी

उच्च उत्तरदायित्व एवं निम्न उत्तरदायित्व समूहों के माध्यमिक शिक्षा में प्रगतिरोध का तुलनात्मक अध्ययन एवं माता–पिता की मनोवृति का तुलनात्मक अध्ययन

माध्यमिक शिक्षा में प्रगतिरोध एवं माता–पिता की मनोवृति	उच्च उत्तरदायित्व समूह	निम्न उत्तरदायित्व समूह
संख्या	110	95
मध्यमान	150.396	137.964
प्रमाणिक विचलन	16.928	16.512
मध्यमानों की प्रामाणिक त्रुटि	1.892	2.002
मध्यमानों का अंतर	12.432	
मध्यमानों के अंतर की प्रामाणिक त्रुटि	2.754	
टी अनुपात	4.514	
सार्थकता स्तर	0.01	

उच्च उत्तरदायित्व समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह के पृथक–पृथक माध्यमिक शिक्षा में अध्ययनरत बालिकाओं के प्रगतिरोध एवं माता–पिता की मनोवृति प्राप्तांकों के उपर वर्णित तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि उच्च उत्तरदायित्व समूह के माता–पिता के मनोवृति प्राप्तांकों का मध्यमान 150. 396 तथा निम्न उत्तरदायित्व समूह के माता–पिता के मनोवृति प्राप्तांकों का मध्यमान 137.964 प्राप्त हुआ है। इन दोनों ही समूहों के मनोवृति प्राप्तांकों का मध्यमानों का अंतर 12.432 पाया गया है। दोनों ही समूहों के अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए टी–अनुपात का सहारा लिया गया जिसके आधार पर प्राप्त टी–अनुपात 4.514 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। प्राक्कल्पना में यह अनुमान किया गया था कि उच्च उत्तरदायित्व के माता–पिता के बालिकाओं की अपेक्षा निम्न उत्तरदायित्व के माता–पिता के बालिकाओं में अधिक प्रगतिरोध पाई जाएगी। अध्ययन के आधार पर वर्तमान निष्कर्ष प्राक्कल्पना के अनुरूप पूर्ण रूप से सत्यापित हो रहा है।

सम्पूर्ण प्रतिदर्श के उत्तरदायित्व प्राप्तांक तथा माता–पिता के मनोवृति प्राप्तांकों के बीच प्रोडक्ट मोमेन्ट सह–संबंध विधि के आधार पर दोनों ही चरों के बीच संबंधों की जाँच हुई। इस जाँच के आधार पर

दोनो ही चरों के बीच 0.324 सह–संबंध गुणांक प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर प्रमाणित हो रहा है। यह सह–संबंध गुणांक दोनों ही चरों के बीच धनात्मक एवं धनिष्ठ सह–संबंध को प्रदर्शित करता है (गैरेट, 1955, सारणी जे , पेज 439)। प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है–

(क) उच्च उत्तरदायित्व के माता–पिता के बालिकाओं की अपेक्षा निम्न उत्तरदायित्व के माता–पिता के बालिकाओं में अधिक प्रगतिरोध पाई गई है।

(ख) उत्तरदायित्व तथा शिक्षा में प्रगतिरोध एवं माता– पिता के मनोवृति के बीच सार्थक उच्च धनिष्ठ सह–संबंध पाया गया है।

(ग) जनसंख्या में व्यक्तित्व के उत्तरदायित्व चर का वितरण सामान्य वितरण सिद्धान्त के अनुकूल प्रमाणित होता है।

(घ) माध्यमिक शिक्षा में अध्ययनरत बालिकाओं में प्रगतिरोध सीधे माता–पिता के मनोवृति से प्रभावित होता है। वर्तमान अध्ययन में इसे स्पष्ट रूप से देखा गया है और प्रमाणित भी हो रहा है।

Reference

I. Andersons, H. H. & Brewer, J. E. (1966). "Effect of Teacher's Dominative and Integrative Contacts on Children's Classroom Behaviour", *Applied Psychology Monographs*, No 8.
II. Brown, R. R. (1946). *Personality and Religion*. London, University of London Press.
III. Brown, F. J. (1954). *Educational Psychology*, 2nd edition, New York: Prentice Hall.
IV. Cattel, R. B. & Eber, H. W. (1962). *Manual for Sixteen Personality Factors Questionnaire*, Institute for Personality and Ability Testing, Champaign, Illinois.
V. Cooper, J. B. (1966). Two Scales for Parent Evaluation. *Journal of Genetic Psychology*, 108, 49-53.
VI. Garrett, Henry E. *General Psychology*.
VII. Gough, H. G. (1964). *Manual Psychological Review*, California, Consulting Psychologists Press, Palo Alto.
VIII. Garette Henry. E. (1955). *Satisfaction, Psychology and Education* (Fourth Edition) Longman, Green & Co. New York.
IX. Goode, W. S. & Hatt, P. K. (1952). *Methods in Social Research*, New York, Mc Grow Hill.
X. Jones, H. E.& Conrad, H. S (1944). *Mental Development in Adolescence*, Forty Third year Book of Society for the Study of Education, Chicago, Illinois, The University of Chicago, pp. 146-163.